ISSN 2348-3857

पंचवटी में बिम्ब-विधान

डॉ. रामेश्वर प्रसाद मीना

व्याख्याता, हिन्दी

स्व.राजेश पायलट राजकीय महाविद्यालय, बांदीकुई, अलवर (राजस्थान)

शोध सारांश

राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त द्वारा रचित 'पंचवटी' काव्य बिम्ब-विधान की दृष्टि से अति महत्वपूर्ण रचना है। एक ओर जहाँ कवि ने पंचवटी में भावों की अभिव्यक्ति की है वहीं दूसरी तरफ उन्होंने पंचवटी काव्य को बिम्ब विधान की दृष्टि से उल्लेखनीय काव्य बना दिया है। बिम्बो की सुन्दरता कवि पर अधिक निर्भर करती है उसके दखने की कला उसे अधिक सुन्दर बना देती है। कवि अपने भावों को व्यक्त करने के लिए जिन साधनों का उपयोग करता है उनमें बिम्ब-विधान भी महत्वपूर्ण है। '' अत: पंचवटी काव्य में सम्पूर्ण शोधात्मक विश्लेषण करने पर भाव बिम्ब के साथ विभिन्न भावों का प्रयोग गुप्त जी ने पंचवटी काव्य में यत्र-तत्र किया है जो बडा ही अनूठा है। यूँ तो कोई भी काव्य हो भावों के आधार पर उसका महत्त्व खड़ा किया जाता है लेकिन पंचवटी काव्य भी एक उन्हीं में से उज्वल एवं अद्वितीय काव्य है।

हिन्दी साहित्य में कविता मानव के भावों को अभिव्यक्त करती है और वह अभिव्यक्ति भाषा द्वारा संभव है। भाषा के द्वारा ही कवि अपने स्रदय के भावों को काव्य में व्यक्त करता है। कवि सामान्य से सामान्य विषय को भी अपने शब्दों की अभिव्यक्ति के माध्यम से श्रेष्ठ काव्य बना देता है उसमें रोचकता से युक्त रस भर देता है। काव्यों में ये जो चमत्कार कवि डालता है वह कभी लाक्षणिक प्रयोगों द्वारा, कभी व्यंजन द्वारा, कभी अलंकारों द्वारा और सबसे अधिक प्रभावशाली ढंग से बिम्बों द्वारा उत्पन्न करता है।

राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त द्वारा रचित पंचवटी काव्य बिम्ब-विधान की दृष्टि से अति महत्वपूर्ण रचना है। एक ओर जहाँ कवि ने पंचवटी में भावों की अभिव्यक्ति की है वहीं दूसरी तरफ उन्होंने पंचवटी काव्य को बिम्ब विधान की दृष्टि से उल्लेखनीय काव्य बना दिया है। ''जो कवि अपनी देखी हुई सुन्दरता को हमें भी दिखा दे जीनियस होगा, किन्तु उसे हम क्या कहकर पुकारेंगे जो अपनी देखने की पूरी शक्ति को ही हमें दे डालता है।[1] बिम्बो की सुन्दरता कवि पर अधिक निर्भर करती है उसके दखने की कला उसे अधिक सुन्दर बना देती है। कवि अपने भावों को व्यक्त करने के लिए जिन साधनों का उपयोग करता है उनमें बिम्ब-विधान भी महत्वपूर्ण है।'' ज्ञानेन्द्रियों से समन्वित मनुष्य जाति जगत नामक अपार और अगाध रूप समुद्र में छोड़ दी गई है। हमारे प्रेम,भय, आश्चर्य, क्रोध, करूणा इत्यादि भावों की प्रतिष्ठा करने वाले मूल आलम्बन बाहर ही के हैं, इसी के चारों ओर फैले, रूपात्मक जगत के ही है। जब हमारी आँखें देखने में प्रवृत्त रहती हैं तब रूप हमारे बाहर प्रतीत होते हैं। जब हमारी वृति अर्न्तमुखी होती है तब रूप और भीतर दिखायी पड़ते हैं। बाहर और भीतर दोनों ओर रहते हैं रूप ही।[2]

काव्य में दृश्य बिम्ब का दो प्रकार से उपयोग किया जाता रहा है। पहले देखी हुई वस्तु का यथातथ्य रूप में वर्णन तथा पूर्वानुभूत दृश्यों के आधार पर निर्मित नया वस्तु व्यापार।[3] राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त की कल्पना शक्ति अत्यन्त प्रबुद्ध और उनका अनुभव क्षेत्र बडा विस्तृत है। अत: उनकी पंचवटी में दृश्य बिम्बों की सजीवता और विविध रूपता देखने को मिलती है। पंचवटी में नायक लक्ष्मण का दृश्य रूप बिम्ब पौराणिक आधार लिए हुए है परन्तु उनका सौन्दर्य अनुपम है उसमें नयापन, आधुनिक सौन्दर्य का चित्र देखते ही बनता है जैसे-

पंचवटी की छाया में है,सुन्दर पर्ण कुटीर बना
उसे सम्मुख स्वच्छ शिला पर,धीर वीर निर्भीक मना
जाग रही यह कौन धनुर्धर,जबकि भुवन नर सोता है ।[4]

यहाँ लक्ष्मण को पर्णकुटी के सामने स्वच्छ शिला पर धैर्यशाली वीर, निर्भीक मनवाला आदि उद्धात गुणों से युक्त दिखाया है। पुंचवटी में कवि का स्रदय नारी सौंदर्य को लेकर भी खूब रमा है उन्होंने सीता जी का सजीव सहज सौन्दर्य दिखाया है जो श्रृंगार के विभिन्न संसाधनों के बिना भी अत्याधिक निखर रहा है।

अहा! अम्बरस्थ उषा भी, इतनी शुचि संस्फूर्ति न थी
अवनी की उषा सजीव थी, अम्बर की सी मूर्ति न थी।
वह मुख देख पाण्डु सा पडकर, गया चन्द्र पश्चिम की ओर
लक्ष्मण के मुँह पर भी लज्जा, लेने लगी, अपूर्व हिलोर।[5]

उपर्युक्त पंक्तियों में कवि ने सीता जी का जो बिम्ब बनाया है उसमें आकाश स्थित उषा सुन्दरी से सीता जी की तुलना की और सीता को अधिक सुन्दर व स्फूर्ति से युक्त बताया है। कवि गुप्त ने केवल सीता, राम व लक्ष्मण को ही नहीं अपितु शूर्पणखा का सौन्दर्य बिम्ब भी चित्रित किया है-

थी अत्यन्त अतृप्त वासना, दीर्घ दृगों से झलक रही
कमलों की मकरन्द मधुरिमा, मानो छवि से झलक रही।
किन्तु दृष्टि थी जिसे खोजती, मानों उसे पा चुकी थी
भूली भटकी मृगी अन्त में, अपनी ठौर आ चुकी थी[6]

कवि ने शूर्पणखा की वासना को उसके विशाल नेत्रों से दिखाया है जो अब तक असन्तुष्ट है। जिसके चेहरे पर राग की मिठास है और वह जिसकी तलाश में भूली सी, भटकी सी हरिणी के रूप में है वह अपने लक्ष्य लक्ष्मण को प्राप्त करने में सफल हो गई है और भारतीय नारी की लज्जा को त्याग कर वह संकोच को छूती भी नहीं है और वह स्वंय लक्ष्मण से वार्ता आरंभ करती है दृश्य बिम्ब देखते ही बनता है।

''प्रथम बोलना पडा मुझे ही, पूछी तुमने बात नही।
इससे पुरुषों की निर्ममता, होती क्या प्रतिभात नहीं।।[7]

पंचवटी में प्राकृतिक बिम्बों को भी आसानी से देखा जा सकता है।''इस काव्य में रम्य प्रकृति का स्वच्छ रूप चित्रित हुआ है और वह प्राय: मानवीय कृत्यों तथा मनोविकारों की पृष्ठभूमि के रूप में रखी गई है। स्थान, समय और परिस्थिति का चित्रण करने के लिए वन्य प्रकृति भी सुन्दरता का विनियोग हुआ है। दृश्य चित्रण की शैली में प्रकृति का अच्छा वर्णन किया गया है और वह गतिशील भी है।[8]

पंचवटी में प्राय: प्रकृति चित्रण के सभी रूपो के दर्शन होते है। पंचवटी के शुरूआत में ही कवि ने प्रकृति के उन्मुक्त रूप का सजीव चित्रण किया है। अंग्रेजी के छंजनतम का पर्याय 'प्रकृति' शब्द है।''हम प्रकृति में अपने क्रोध, प्रसन्नता, उमंग, उल्लास आदि भावों की छाया भी देखते हैं। प्रकृति का सौन्दर्य भी शाश्वत है। इसके सौन्दर्य पर मानवीय जगत की विभीषिकाओं का कोई प्रभाव नहीं देखा जाता, दु:ख की ज्वालाओं में जलते संसार के बीच यह अपने ही आनन्दोत्सव में थिरकती रहती है।[9]

प्राकृतिक बिम्बों की दृष्टि से पंचवटी रचना को इसलिए भी अधिक रचनात्मक बना दिया है कि इसमें जो बिम्ब उभरते हैं वो केवल सूक्ष्म, मादक और रसमग्न करने वाले ही अधिक चित्रित हुए है। जब हमारी दृष्टि पंचवटी के प्रकृति परक बिम्बों पर जाती है तो हमें पंचवटी में आद्ययान्त प्रकृति बिम्ब ही नजर आते हैं। पंचवटी काव्य की शुरूआत ही प्राकृतिक बिम्बों से होती है-

चारू चन्द की चंचल किरणें, खेल रही है जल थल में,
स्वच्छ चाँदनी बिछी हुई है, अवनि और अम्बर तल में।
पुलक प्रकट करती है धरती, हरित तृणों की नोको से
मानों झूम रहे है तरू भी, मन्द पवन के झोंकों से ।।[10]

यहाँ जो प्राकृतिक बिम्ब गुप्त ने उपस्थित किया है वह सीधे पाठक के हदय को पुलकित करता है। कवि ने रात्रिकालीन वन सम्पदा की सुन्दर झांकी उपस्थित भी है। इसके अतिरिक्त प्रकृतिपरक बिम्बों की भी पंचवटी में भरमार है जो पाठक को आनन्दित कर देती है जैसे-

है बिखरे देती वसुन्धरा, मोती सबके सोने पर
रवि बटोर लेता उनको, सवा सवेरा होने पर।
और विरामदायिनी अपनी, सन्ध्या को दे जाता है,
शून्य श्याम तनु जिसको उसका, नया रूप छलकाता है।[11]

प्रकृति चित्रण के इस बिम्ब के शास्त्रीय भाषा में आलम्बन रूप की संज्ञा दी जाती है। इसी प्रकार संवेदनशीलता को कवि द्वारा चित्रित किया जाता है। और इस पर आधारित अनुभव संवेदनशीलता को कवि द्वारा चित्रित किया जाता है। और पाठक को संवेदनशीलता का अनुभव करता है तो वहाँ संवेद्य बिम्ब उपस्थित हो जाता है। संवेद्य बिम्ब, मानवीय इन्द्रियों से सृजित बिम्ब होते हैं। जिसमें - स्पर्श, श्रवण, घ्राण, वर्ण, आस्वाद आदि आते हैं। संवेद्य बिम्ब पाठक की भावनाओं व संवेदनाओं को छूते हुए अपना गुण बरकरार रखते हैं। मैथिलीशरण गुप्त द्वारा रचित पंचवटी इन बिम्बों से ओतप्रोत काव्य है-

संवेदनशील कवि स्पर्श अनुभवों को काव्य में मूर्तित करने का प्रयास करता है जिससे कवि द्वारा ग्रहीत अनुभव पाठकों के

लिए भी ग्राहय हो सके । मंजूला मोहन का मानना है कि कोमलता, कर्कशता, कठोरता, रूक्षता, चिक्कणता आदि स्पर्श बिम्बों के वाचक हैं। ताप, शीतलता, चुभन, हल्कापन, गुरुता आदि गुण भी इसी प्रकार के बिम्बों में समाहित होते हैं।[12]

अत: स्पर्श बिम्ब तब तक नहीं हो सकता जब तक वर्ण्य विषय में स्पर्शजन्य संवेदन का वर्णन न हो। इसके लिए स्पर्शानुभूति की स्थिति अनिवार्य है। डॉ. सी. तुलसम्या का मानना है कि स्पर्श बिम्ब में व्याकुल स्रदय का मृदु कम्पन, मृदृ झंकार, सुकुमार, पीडा, आदि अनुभव होते हैं।[13]

काव्य में स्पर्श गुण कम होते हैं भावावेश में होने वाले स्पंदनो एवं गौणत: वस्तुगत कोमलता -कठोरता के प्रकरणों में इसका विधान होता है। पंचवटी काव्य में संबंध बिम्ब इस प्रकार देखे जा सकते है-

जिसकी रूप स्तुति करती हो, तुम आवेग युक्त इतनी
उसके शील और कुल की भी, अवगति है तुमको कितनी ?
उत्तर देती, हुई कामिनी, बोली आंग शिशिल करके
हे नर, यह क्या पूछ रहे हो, अब तुम हाय, स्रदय हर के।[14]

एक स्थान पर कवि ने लक्ष्मण द्वारा प्रकृति के क्रिया कलापों में प्रकृतिपरक गंध बिम्ब का भी चित्र उकेरा है, जो सहसा पाठक के स्रदय की तन्त्री को बजा देता है।जैसे-

क्या ही स्वच्छ चांदनी है यह, क्या ही निस्तब्ध निशा
है स्वचछन्द समुन्द गंध वह, निरानन्द है कौन दिशा ?[15]

रसना द्वारा आस्वद पदार्थों के प्रसंग में प्रयुक्त होने पर अम्लता, मधुरता आदि धर्म रस बिम्ब उभारने से समर्थ होते हैं। पंचवटी में शान्त रस बिम्ब, वात्सल्य रस बिम्ब तथा रौद्र, भयानक रस बिम्बो का प्रयोग कवि ने किया है। पंचवटी में प्रमुख पात्र सीता के क्रिया-कलापों पर दृष्टिपात करते है तो हमें अनायास ही वात्सल्य भाव के साथ वासत्य रस बिम्ब मिल जाते है-

आ आकर विचित्र पशु-पक्षी, यहाँ बिताते दोपहरी,
भाभी भोजन देती उनको, पंचवटी छाया गहरी।
चारू चपल बालक ज्यों मिलकर
मां को घेर खिझाते है।[16]

उपर्यक्त पद में कवि ने सीता के पशु-पक्षियों के प्रति वात्सल्य भाव को लक्ष्मण के द्वारा कहलवाया है। नाद की झंकार से झंकृत कविता की पंक्तियों में अमूर्त भावों का मूर्त रूप सहज ही प्राप्त होता है। कवि की अनुभूति उत्तम ध्वनि चित्र में अपनी विशेष स्थिति अथवा भाव दशा के साथ व्यंजित होती है।[17]

भाषा में नाद तत्व विद्यमान है इसलिए सुमित्रानन्दन पंत कहते हैं कि भाषा संसार का नादमय चित्र है विश्व की स्रदय तन्त्री की झंकार है। रामचन्द शुक्ल के अनुसार नाद सौंदर्य कविता की आयु को बढाता है।[18]

जिस प्रकार पंचवटी काव्य रसानुभूति की दृष्टि उल्लेखनीय है, उसी प्रकार भाव-बिम्बों की दृष्टि से वह प्रभावी बन पड़ी है। इसकी भावपरक बिम्बों की स्थिति का आकलन सौन्दर्य भावों से लगाया जा सकता है। पंचवटी एक ऐसी रचना है जिसमें लज्जा, हर्ष, मद, ग्लानि, विषाद, शंका,व्याधि, उन्माद, स्मृति, आवेग आदि कितने प्रकार के भावों द्वारा भाव-बिम्बों की रचना बन पडी है। मनुष्य में समय-समय पर मनोभाव उत्पन्न होते रहते हैं उन सब मनोभावों को बिम्बों की दृष्टि से पंचवटी में आसानी से देखा जा सकता है। हर्ष भाव बिम्ब का एक उदाहरण इस प्रकार है-

चारू चन्द्र की चंचल किरणें, खेल रही है जल थल में,
स्वच्छ चांदनी बिछी हुई है, अवनि और अम्बर तल में।[19]

अर्थात् अवनि और आकाश के नीचे पुलक रहे हरे तृण भी हर्षित हो रहे हैं यहाँ हर्षित भाव बिम्ब का प्रयोग किया गया है। इसके अतिरिक्त पंचवटी में ग्लानि भाव बिम्ब भी देखने को मिलता है।

मंझली मां ने क्या समझा था, कि मै राजमाता होऊँगी,
निर्वासित कर आर्य राम को, अपनी जड़ें जमा लूंगी
चित्रकूट में किन्तु उसे ही, देख स्वयं करूणा थकती,
उसे देखते थे सब वह थी, निज को ही न देख सकती।[20]

उपर्युक्त वक्तव्य में लक्ष्मण न केवल कैकयी के कर्मों से दु:खी होकर ग्लानि से भरे हुए है बल्कि स्वंय कैकयी भी अपने कर्मों के कारण इतनी ग्लानिमय हो गई कि वह स्वयं को भी नहीं देख पा रही है। अत: यहाँ ग्लानि भाव-बिम्ब का प्रयोग किया गया है। पंचवटी में स्मृति एवं उन्माद भरे भाव बिम्बों को भी यथास्थान देखा जा सकता है। पंचवटी का सांगोपांग अध्ययन करने पर हम पाते हैं कि पंचवटी में स्मृति बिम्ब का सबसे ज्वलन्त उदाहरण लक्ष्मण द्वारा तेरह वर्ष व्यतीत होने पर अयोध्या एवं पिता की याद (स्मृति) ताजा हो आती है।

तेरह वर्ष व्यतीत हो चुके, पर मानो कल की बात,
वन को आते देख हमें जब, आर्त, अचेत हुए थे तात।
अब वह समय निकट ही है जब, अवधि पूर्ण होगी वन की
किन्तु प्राप्ति होगी इस जन को, इससे बढकर किस धन की ।[21]

अत: यहाँ लक्ष्मण अपने तेरह वर्ष पूर्व के उस पल की स्मृति में डूब गया, जब वे वनवास को आये थे। साथ ही विषाद भी है कि पिता उस समय वनगमन के कारण बेहोश भी हो गये थे। अत: यहाँ स्मृति भाव बिम्ब का प्रयोग किया गया है।

रति श्रृंगार का स्थायी भाव है रसों का राजा श्रृंगार हिन्दी साहित्य में युगों से साहित्य में श्रेष्ठ स्थान पर है। डॉ. सी. तुलस्म्मा ने कहा है ''सौन्दर्य ही वह बीज है जिससे प्रेम भावना अंकुरित होती है। सौन्दर्य में ऐसी चुम्बकीय शक्ति रहती है। जो संवेदनशील ह्रदय को अपने निकट खींच लेती है।''[22] यहाँ पंचवटी में पारिवारिक प्रेम दर्शाया है जहाँ राम और सीता के मध्य तथा लक्ष्मण और राम के मध्य एवं सीता और लक्ष्मण के मध्य प्रेम दिखाया गया है। लक्ष्मण का राम के प्रति प्रेम इतना है कि वे भी उनके साथ चौदह वर्ष का वनवास करने को चल दिये। भाई के प्यार के कारण। मैथिलीशरण गुप्त ने काव्य में प्रेम भाव बिम्ब का प्रयोग किया वो अनूठा बन पडा है।

क्या कर्तव्य यही है भाई, लक्ष्मण ने सिर झुका लिया,
आर्य आपके प्रति इस जन ने, कब-कब क्या कर्तव्य किया
प्यार किया तुमने केवल, सीता यह कर मुस्कुराई।
किन्तु राम की उज्ज्वल आँखें, सफल सीप सी भर आई।

वियोग श्रृंगार भाव बिम्ब भी पंचवटी में बडी मात्रा में देखे जा सकते है। जिसमें उर्मिला का वियोग भाव बिम्ब इस प्रकार है-

बेचारी उर्मिला हमारे, लिए व्यर्थ रोती होगी
क्या जाने वह हम सब वन में, होगे इतने सुख भोगी।
मग्न हुए सौमित्र चित्रसम, नेत्र निमीलित एक निमेष
फिर आँखें खोले तो यह क्या, अनुपम रूप, अलौकिक भेष।।[24]

उपर्युक्त पंक्तियों में लक्ष्मण का खजनों में उर्मिला का स्मरण तथा वियोग भाव से पीड़ित होना दर्शाया है।

अत: पंचवटी काव्य में सम्पूर्ण शोधात्मक विश्लेषण करने पर भाव बिम्ब के साथ विभिन्न भावों का प्रयोग गुप्त जी ने पंचवटी काव्य में यत्र-तत्र किया है जो बडा ही अनूठा है। यों तो कोई भी काव्य हो, भावों के आधार पर उसका महत्त्व खड़ा किया जाता है। लेकिन पंचवटी काव्य भी एक उन्हीं में से उज्ज्वल एवं अद्वितीय काव्य है। अत: सम्पूर्ण पंचवटी काव्य बिम्बों की दृष्टि से एक महान रचना है जिसमें सौन्दर्य बिम्ब, प्राकृतिक बिम्ब, संबंध बिम्बों की भरमार है।

संदर्भ सूची

1. नवल, नंद किशोर, दिनकर अर्धनारीश्वर कवि, राजकमल प्रकाशन प्रा. लि. दरिया गंज नई दिल्ली, 2013, पृ. 142
2. शुक्ल, रामचन्द्र रस मीमांसा, पृ. 211
3. मंजूला मोहन तुलसी काव्य में बिम्ब विधान, पृ. 38
4. गुप्त मैथिलीशरण, पंचवटी, साकेत प्रकाशन, झांसी, 1998, पृ. 4
5. वही, पृ. 35
6. वही, पृ. 19
7. वही, पृ. 9
8. शर्मा, डॉ. कृष्ण देव, पंचवटी : आलोचनात्मक अध्ययन, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा, 1993, पृ. 2
9. सिंह, देशराज, दिनकर और उनकी उर्वशी अशोक प्रकाशन, नई सडक, दिल्ली, पृ. 63
10. गुप्त, मैथिलीशरण, साकेत प्रकाशन, राष्ट्रकवि निवास चिरगॉव, झांसी पंचवटी, 1998, पृ. 3
11. वही, पृ. 6
12. मंजूला मोहन-तुलसी काव्य में बिम्ब विधान, पृ. 95
13. तुलसम्मा, डॉ. सी., महोदवी की कविता में सौन्दर्य भावना, पृ. 109
14. वही, पृ. 33
15. वही, पृ. 6
16. वही, पृ. 16
17. सिंह, डॉ.केदारनाथ, आधुनिक हिन्दी कविता में बिम्ब विधान, भररतीय ज्ञान पीठ दिल्ली, 1991 पृ. 146
18. शुक्ल, रामचन्द्र, रस मीमांसा, पृ. 38
19. वही, पृ. 03
20. वही, पृ. 08
21. वही, पृ. 07
22. तुलसम्मा, डॉ. सी., महोदवी की कविता में सौन्दर्य भावना, पृ. 110
23. वही, पृ. 02
24. वही, पृ. 18